चीन 'विकासशील के दर्जे' को अनुरक्षित रखते हुए WTO के विशेष लाभ छोड़ने को तैयार

[स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया]

चीन ने घोषणा की है कि वह भविष्य में **विश्व व्यापार संगठन (WTO) समझौतों** में **विशेष एवं विभेदक उपचार (SDT)** की मांग नहीं करेगा, हालाँकि वह **विकासशील देश** का दर्जा बरकरार रखेगा।

- **चीन**, जो अब **19 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** के साथ विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, वर्ष **2001 में विश्व व्यापार संगठन** में शामिल होने के बाद से **1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** तक बढ़ चुका है।

विश्व व्यापार संगठन विकासशील राष्ट्र का दर्जा

- **स्व-घोषणा:** विश्व व्यापार संगठन में **विकासशील या विकसित राष्ट्रों** की कोई आधिकारिक परिभाषा नहीं है; सदस्य स्वयं अपनी स्थिति निर्धारित करते हैं, हालाँकि यदि लाभों का दुरुपयोग किया जाता है तो अन्य देश **चुनौती** दे सकते हैं।
  - **विश्व व्यापार संगठन** में स्व-घोषित **विकासशील देश** का दर्जा **सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (GSP)** जैसी एकतरफा योजनाओं के तहत लाभ की गारंटी नहीं देता है।
  - चीन द्वारा **SDT (विशेष एवं भिन्न व्यवहार)** त्यागने का निर्णय **स्वैच्छिक है, बाध्यकारी नहीं**।
  - यह **विकासशील देश का दर्जा** और पिछले अधिकारों को बरकरार रखेगा, साथ ही स्वयं को एक **ज़िम्मेदार प्रमुख विकासशील देश** के रूप में पेश करेगा जो **बहुपक्षवाद** को मज़बूत करने हेतु सख्त व्यापार दायित्वों को स्वीकार करने के लिये तैयार है।
- **स्थिति का महत्त्व:** SDT विकासशील तथा कम विकसित देशों को दायित्वों को पूरा करने में अधिक लचीलापन प्रदान करता है, जैसे कि **लंबी समय-सीमा, अधिमान्य उपचार, तकनीकी सहायता और कुछ छूटें**।
  - इसका उद्देश्य सदस्य देशों की विभिन्न क्षमताओं को स्वीकार करते हुए **व्यापार नियमों में समानता** को बढ़ावा देना है।
- **निहितार्थ:** यह कदम **विवादास्पद विकसित बनाम विकासशील बहस** को **दरकिनार करके** एक प्रमुख **वार्ता गतिरोध** को **समाप्त** करता है, तथा संभावित रूप से नए व्यापार समझौतों पर प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है।
  - यह घटनाक्रम भारत को **WTO सुधारों का समर्थन करने का अवसर देता** है, जिसमें **बड़े मध्यम-आय वाले देशों और निम्न-आय वाले विकासशील देशों** के बीच अंतर किया जा सके, तथा SDT के लिये स्पष्ट और न्यायसंगत मानदंड बनाए जा सकें ताकि 'स्व-घोषणा' से जुड़ी अस्पष्टताओं का अंत हो।

भारत के प्रमुख व्यापार समझौते

पड़ोसी देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता (FTA)

- भारत-श्रीलंका FTA
- भारत-नेपाल व्यापार संधि
- व्यापार, वाणिज्य और पारगमन पर भारत-भूटान समझौता

भारत के क्षेत्रीय मुक्त व्यापार समझौते (FTA)

- **भारत आसियान वस्तु व्यापार समझौता (11):** 10 आसियान देश + भारत
- **दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौता (7):** भारत, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान और मालदीव
- **व्यापार प्राथमिकताओं की वैश्विक प्रणाली** (41 देश + भारत)

भारत का CECA और CEPA

CECA/CEPA मुक्त व्यापार समझौते से अधिक व्यापक है, जो नियामक, व्यापार एवं आर्थिक पहलुओं को व्यापक रूप से संबोधित करता है, CEPA में सेवाओं, निवेश आदि समेत व्यापक क्षेत्र है, जबकि CECA मुख्य रूप से टैरिफ और TQR दरों के समझौते पर केंद्रित है।

- **संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण कोरिया, जापान** के साथ CEPA
- **सिंगापुर, मलेशिया** के साथ CECA

मुक्त व्यापार समझौता देशों के बीच एक व्यापक समझौता है, जो विशिष्ट उत्पादों और सेवाओं को छोड़कर एक नकारात्मक सूची (negative list) के साथ अधिमान्य व्यापार शर्तों और टैरिफ रियायतों की पेशकश करता है।

- **अन्य:**
  - भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA)
  - भारत-थाईलैंड अर्ली हार्वेस्ट स्कीम (EHS)
  - भारत-मॉरिशस व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता (CECPA)

एक अर्ली हार्वेस्ट स्कीम (EHS) FTA/CECA/CEPA से पहले होता है, जहाँ समझौता करने वाले देश टैरिफ उदारीकरण के लिये उत्पादों का चयन करते हैं, व्यापक व्यापार समझौतों का मार्ग प्रशस्त करते हैं और आत्मविश्वास को बढ़ावा देते हैं।

अधिमान्य व्यापार समझौते (PTA)

PTA में भागीदार सहमत टैरिफ सीमाओं पर शुल्क कम करके, कम या शून्य टैरिफ के लिये पात्र उत्पादों की एक सकारात्मक सूची बनाए रखते हुए विशिष्ट उत्पादों तक अधिमान्य पहुँच प्रदान करते हैं।

- **एशिया प्रशांत व्यापार समझौता (APTA):** बांग्लादेश, चीन, भारत, दक्षिण कोरिया, लाओ PDR, श्रीलंका और मंगोलिया
- **SAARC अधिमान्य व्यापार समझौता (SAPTA):** SAFTA के समान
- **भारत-MERCOSUR PTA:** ब्राजील, अर्जेंटीना, उरुग्वे, पैराग्वे और भारत
- **चिली, अफगानिस्तान** के साथ भारत का PTA

Drishti IAS

और पढ़ें: चीन को विकासशील देश का टैग: विश्व व्यापार संगठन

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/china-to-retain-developing-status-but-forgo-wto-benefits